उपसंहार

उ प सं हा र

डॉ. रामदरश मिश्र हिंदी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है। आपने कविता, उपन्यास, कहानियां, ललित निबंध, आत्मकथा, यात्रा वर्णन के साथ-साथ संपादकीय, समीक्षक की हैसियत से हिंदी साहित्य को बहुत बडा योगदान दिया है। आपका जन्म गोरखपुर जिले के कछार-अंचल के पिछडे हुए डुमरी गांव में हुआ। आप हिंदी साहित्य में कवि के रूप में आये। आपको कविता लिखने की प्रेरणा अपने गांव के परिवेश से मिली। आपने ग्रामीण जीवन की समस्याओं को बचपन से देखा था, सह लिया था। अतः आपकी कविताओं में ग्रामीण जीवन की तनावग्रस्त जिंदगी, पर्व तथा त्यौहारों का उल्लास, प्रकृति के विविध रंग आदि का चित्रण है। आप पढाई के लिए शहर गये, फिर नौकरी की खोज में एक शहर से दूसरे शहर भटकते रहे। आपका संबंध नागरी परिवेश से आया। परिणामतः आपके विचार प्रगल्भ हुए। आपने कविता के साथ-साथ उपन्यास, कहानियां भी लिखी।

मिश्र जी की पहली कहानी 'संध्या' सन 1950 में 'आज' पत्रिका में प्रकाशित हुई। उसके बाद 'प्रायश्चित्त' कहानी प्रकाशित हुई। आप हिंदी साहित्य में सफल कहानीकार के रूप में उभरकर सामने आये। आपकी कहानियों में ग्रामीण और नागरी जीवन का सशक्त चित्रण हैं। उसमें नागरी जीवन से बढ़कर ग्रामीण जीवन की समस्याओं का बहुत ही वास्तविक एवं सजीव चित्रण है। हिंदी के कहानीकारों ने ग्रामीण जीवन पर कहानियां लिखी हैं। लेकिन मिश्र जी ने अपनी कहानियों में ग्रामीण जीवन का चित्रण जिस आत्मीयता और लगन से किया है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।

मिश्र जी ने अपने अनुभव और आस-पास के पात्रों के जरिए ग्रामीण जीवन की समस्याओं को उजागर किया हैं। आपकी ग्रामीण जीवन पर लिखी हुई कहानियों में भ्रष्टाचार और कालाबाजार, जात-पात और छुआछूत, रूढ़ियां और परंपराएं, शोषण, अंधविश्वास, टूटते हुए पारिवारिक संबंध, नारी की दयनीय स्थिति, प्राकृतिक प्रकोप, बेरोजगारी, नगरोन्मुखता, सरकारी अधिकारियों का भ्रष्टाचार, अवसरवादी नेता और उनका भ्रष्टाचार आदि का वास्तविक चित्रण मिलता है।

आजादी के बाद वर्तमान परिस्थिति में भ्रष्टाचार और कालेबाजार के कारण समाज में अनीति, बेईमानी की प्रवृत्ति बढ रही है, उसका यथार्थ चित्रण मिश्र जी की कहानियों में मिलता है। राशन दूकानदार के भ्रष्टाचार के कारण गरीब, दीन-हीन मजदूरों की असहाय स्थिति का चित्रण 'दिनचर्या' कहानी में है। 'कर्ज' कहानी में सरकारी अधिकारी और पुलिस के भ्रष्टाचार का वर्णन है। सरकारी अधिकारी और थानेदार ठाकुर धरमचंद जैसे पूंजीपतियों से रिश्वत लेकर सामान्य लोगों पर अत्याचार करते हैं। 'मुर्दा मैदान' कहानी में भ्रष्ट थानेदार गुंडों से रिश्वत लेकर भोला के पिता की पिटाई करता है। 'कहां जाओगे' कहानी में सरकारी अधिकारियों के रिश्वत के बिना काम न करने की प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला हैं।

ग्रामीण लोग अज्ञान के कारण रूढी एवं परंपरा में अधिक विश्वास रखते हैं। अतः उंचे वर्ग के लोग निम्न जाति के लोगों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते। वे जात-पात, छुआछूत को अधिक महत्व देते हैं। 'जमीन' कहानी के मोहन को जात-पात के कारण आम मालिक कोसता है और पीटता है। 'सर्पदंश' कहानी के गोकुल को सांप ने काटा था। भवानीबाबा उस पर इलाज कर रहे थे, तब उंची जाति के लोग ताने कसते हैं। जात-पात, छुआछूत के कारण निम्न जाति के लोगों की जिंदगी, उनका जीना-मरना आदि उन्हें साधारण-सी बात लगती हैं। 'पानी' कहानी के मंगल ने रामदेव बाबू के बेटे की जान पानी पिलाकर बचायी। लेकिन वह हरिजन था इसलिए धर्म डूब गया समझकर उन्होंने उसे पीटा।

देहातों के अनपढ़ एवं अज्ञानी लोग रूढियां एवं परंपराओं से चिपके हुए हैं। वे अपने हित-अहित, भले-बूरे को नहीं समझते। रूढियों और परंपराओं के कारण कष्ट सहते हैं, इस प्रवृत्ति का चित्रण मिश्र जी ने यथार्थ रूप में किया है। 'मुक्ति' कहानी में लोगों की खोखली सभ्यता और प्रतिष्ठा का वर्णन किया हैं। चंदा के पिताजी ने जवान बेटियों की शादी से सामाजिक प्रतिष्ठा को महत्व दिया और मकान बांधने लगे। 'निर्णयों के बीच निर्णय' कहानी पढे-लिखे दिनेश की जिंदगी सनातनी विचार और सामाजिक रूढ़ियों के कारण बर्बाद हुई। 'बेला मर गयी' कहानी में सामाजिक रूढ़ियों और परंपराओं के कारण बेला की जिंदगी तबाह हो गयी। 'आखिरी चिट्ठी' कहानी में सामाजिक रूढ़ियों के कारण प्रभा के साथ कैसे अमानुष अत्याचार किए, उसका वर्णन है। 'लडकी' कहानी में परंपरागत रूढ़ियां और अज्ञान के कारण लोगों की लडका और लडकी में भेद मानने प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला है।

ग्रामीण लोग अनपढ़ और अज्ञानी होने के कारण मंत्र-तंत्र, जादू-टोणा, ज्योतिष आदि पर अधिक विश्वास करते हैं। अंधविश्वास के कारण उनके जीवन में अनेक संकट आते हैं। अनपढ़ और अज्ञानी लोगों के अज्ञान का लाभ पाखंडी लोग उठाते है। 'सर्पदंश' कहानी के गोकुल को सांप ने काटा था। उस पर भवानी बाबा इलाज करते हैं। अज्ञान के कारण लोग डॉक्टर से जादा विश्वास भवानी बाबा के मंत्र-तंत्र पर करते हैं। 'मां, सन्नाटा और बजता हुआ रेडियो' कहानी में लेखक के पिताजी अंधविश्वास के कारण संकटों के साथ जूझने के लिए तैयार होते हैं लेकिन मकान और जमीन नहीं बेचते। 'वसंत का एक दिन' कहानी में सच्चाई को देखे बिना अप्रिय घटनाओं के लिए जिम्मेदार ठहराकर लोगों ने फुलवा पर अत्याचार किये।

आधुनिक काल में संयुक्त परिवारों में विघटन हो रहा हैं। परिवार में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, भाई-भाई, पति-पत्नी के संबंधों में विघटन हो रहा हैं। मिश्र जी ने टूटते हुए पारिवारिक संबंधों की समस्या को अपनी कहानियों में उजागर किया हैं। 'घर लौटने के बाद' कहानी में दीनू भाई

को अपने भाई के परिवार में कोई कीमत नही रही। उसको अपमानित किया जाता है। "घर" कहानी में बलराम की अवस्था का करूण चित्रण है। "आखिरी चिट्ठी" कहानी में माता-पुत्र के टूटते हुए संबंध का वर्णन है। "मुक्ति" कहानी में पिता-पुत्री के संबंध चित्रण है। पिता के स्वभाव के कारण चंदा घर छोडकर चली गयी। "आखिरी चिट्ठी", "इज्जत" और "एक भटकी हुई मुलाकात" आदि कहानियों में पति-पत्नी के टूटते हुए संबंधों का चित्रण हैं।

समाज में नारी की कोई कीमत नहीं है। उसे सामाजिक और नैतिक बंधनों में जकड़कर रखा हैं। उसे केवल भोग्या समझा जाता है। उस पर अत्याचार किये जाते हैं। नारी की इस दयनीय स्थिति का चित्रण मिश्र जी ने अपनी कहानियों में किया हैं। "एक औरत एक जिंदगी" कहानी में भवानी पर धनपतिया द्वारा किए गए अत्याचार का वर्णन हैं। "आखिरी चिटठी" कहानी की प्रभा पर उसका पति और सास अमानुष अत्याचार करते हैं। "पशुओं के बीच" कहानी के सरपंच अलेना पर अन्याय, अत्याचार करते है। "एक भटकी हुई मुलाकात" कहानी में अंजली के पति उसे तलाक देकर उस पर अन्याय करते हैं। "इज्जत", "हद से हद तक" आदि कहानियों में नारी की असहाय स्थिति का और उस पर किए गए अत्याचारों का चित्रण है।

आजादी के बाद सरकार की योजनाएं ग्रामीण जनता की स्थिति में सुधार लाने में सफल नही हुई। औद्योगिककरण के कारण बेरोजगारी की समस्या दिन-ब-दिन बढ़ती ही गयी। इसका चित्रण मिश्र जी अपनी कहानियों में पूरी क्षमता के साथ किया है। "दिनचर्या" कहानी के कतवारू को गांव में काम न मिलने के कारण भूखा रहना पड़ा। "एक रात" कहानी में पढ़े-लिखे प्रवीण की बेरोजगारी की समस्या की ओर संकेत किया है।

देहातों में काम कमी के कारण लोग नगरों की ओर बढ़ते गये। गांव उजड़ने लगे। इस परिस्थिति का चित्रण मिश्र जी ने "कर्ज", "दिनचर्या" आदि कहानियों में किया हैं।

प्राकृतिक प्रकोपों के कारण ग्रामीण जन-जीवन की दुर्दशा का करूण चित्रण मिश्र जी ने अपनी कहानियों में करके पाठकों को अवगत कराया है। "एक औरत एक जिंदगी" और "चिट्ठियों के बीच" कहानियों में बाढ़ के कारण ग्रामीण जन-जीवन पर आपत्ति आती है। उसके भयंकर परिणामों का करूण चित्रण हैं। "मां, सन्नाटा और बजता हुआ रेडियो" कहानी में अकाल के कारण ग्रामीण लोगों की दुर्दशा का हु-ब-हू चित्रण है।

आजादी के बाद सरकार ने नई-नई योजनाएं और प्रकल्प शुरू किये। आम जनता सुख और समृध्दि के सपने देखने लगी। लेकिन राजनीति में भ्रष्ट नेता आये। वे अपने स्वार्थ के कारण जनता को भूल गये। ऐसे भ्रष्ट, स्वार्थी, अवसरवादी नेताओं के भ्रष्टाचार का वर्णन मिश्र जी ने अपनी कहानियों में किया है। "सडक" कहानी के जंगबहादुर यादव स्कूल में चोरी करते थे, पढ़ाई न करने और शरारती

होने से पिटाई होती थी। वही आवारा यादव एम.एल.ए. बने है। "मां, सन्नाटा और बजता हुआ रेडियो" कहानी में नेताओं का दौरे पर जाना, लोगों को आश्वासन देकर फंसाने की तथा चालाख प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला है। "कहां जाओगे" कहानी में आश्वासन देकर पालन न करनेवाले, धूर्त और चालाख नेता का चित्रण करती है। "खंडहर की आवाज" कहानी में दलबदलू, अवसरवादी तथा भ्रष्ट नेता का चित्रण है।

मिश्र जी ने ग्रामीण जीवन की विसंगतियों और समस्याओं को अपने अनुभव और सामान्य पात्रों के जरिए उजागर किया हैं। पात्रों के गुण-अवगुण, रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचार, रीति-रिवाज, पर्व-त्यौंहार आदि को उनके परिवेश के अनुसार चित्रित किया है। ये पात्र अपनी भाषा में अपनी समस्याओं का बयान करते हुए कहानियों में पाठकों के सामने पेश होते हैं। उनकी संघर्ष करने की वृत्ति, अंधविश्वास, सनातनी एवं रूढ़ीवादी भाव-भंगिमाएं आदि का चित्रण मिश्र जी ने सहजता से किया है। आपने गांव के कुंठाग्रस्त जीवन को नजदीकी से देखा और जिया था। अतः ग्रामीण जन-जीवन की समस्याएं और उसका ग्रामीण जन-जीवन पर पडनेवाले असर का चित्रण आपने अपने अनुभव से गहराई में पैठकर किया है। परिणामतः आपकी कहानियों में चित्रित ग्रामीण समस्याओं का स्वरूप अपने मूल रूप में पाठकों के सामने उभरकर आता है। मिश्र जी की कहानियों में उपर्युक्त विशेषताएं होने के कारण वे ग्रमीण जीवन के चितेरे माने जा सकते हैं।

000